7

सवाल-जवाब

सामान्य

सवाल : *आप मानवता को जीवन विरोधी कहते हैं। इससे आपका क्या मतलब है? मैं जीवन विरोधी नहीं हूँ, न ही मेरे मित्र।*

मैंने अपने जीवन में दो भयावह विश्वयुद्ध देखे हैं। सम्भव है कि मैं एक तीसरा और अधिक भयानक युद्ध भी देखूँ। कई करोड़ नौजवान इन दो युद्धों में मरे हैं। जब मैं छोटा-सा लड़का था तो तमाम सैनिक 1914 और 1918 के बीच दक्षिण अफ्रीका में उस साम्राज्यवादी युद्ध में खप रहे थे जो तमाम युद्धों को खत्म करने के नाम पर लड़ा जा रहा था। 1939 से 1945 के दौरान फासीवाद को खत्म करने के नाम पर वे जान गँवा रहे थे। कल वे शायद साम्यवाद के दमन के नाम पर मरें। इस सबका मतलब यह है कि कुछ केन्द्रीय ताकतों के हुक्म पर, लोग उन मुद्दों के नाम पर अपने और अपने बच्चों के जीवन की आहुति दे डालते हैं, जो उनके व्यक्तिगत जीवन को छूते तक नहीं हैं।

अगर हम राजनीतिज्ञों, व्यापारियों या शोषकों के मोहरे बने रहे तो हम जीवन विरोधी और मृत्यु प्रेमी ही रहेंगे। हम मोहरे इस अर्थ में हैं कि हमें जीवन को नकारात्मक रूप में तलाशने को प्रशिक्षित किया गया है। हमें प्रशिक्षित किया गया है कि हम निरीह भाव से सत्ता-लोलुप समाज के अनुरूप खुद को ढालते चलें। अपने मालिक के हुकुम पर, उसके आदर्शों के लिए जान गँवाने को तैयार रहें। रूमानी उपन्यासों में ही लोग प्रेम के नाम पर जान देते हैं। वास्तविक जीवन में लोग घृणा के लिए मरते हैं।

यह तो था भीड़ का पक्ष। पर व्यक्तिगत रूप से भी मानव अपने रोज़मर्रा की ज़िन्दगी में जीवन विरोधी है। उसका वैवाहिक जीवन असन्तोषजनक होता है, उसकी सारी मौज-मस्ती घटिया किस्म की और सच्चाई से भागने की होती है। वह नैतिकता का नाड़ा पकड़े रहता है, हर तरह की स्वाभाविकता को वह गलत या अपर्याप्त मानता है। और यही सब वह अपने बच्चों को भी सिखाता है।

जीवन प्रेमी बच्चे में शारीरिक सुख या पढ़ने-लिखने के प्रति, ईश्वर, शिष्टाचार या सौम्य व्यवहार के प्रति अपराध-बोध पैदा नहीं किया जा सकता। जो माता-पिता या शिक्षक जीवन प्रेमी हैं वे अपने बच्चों को मारते-पीटते नहीं हैं। कोई जीवन प्रेमी नागरिक हमारी दण्ड संहिता को, फाँसी की सज़ा को, समलैंगिकों को दी जाने वाली सज़ाओं को, गैर-कानूनी औलाद के प्रति हमारे दृष्टिकोण को झेल ही नहीं

सकता। कोई भी जीवन-प्रेमी इन्सान गिरजे में बैठकर यह घोषणा नहीं कर सकता कि वह एक अधम पापी है।

मैं साफ कर दूँ कि मैं स्वेच्छाचारिता का हिमायती नहीं हूँ। मेरे लिए चीज़ों को जाँचने का सीधा-सा तरीका है। *जो अगला आदमी कर रहा है, क्या वह सच में किसी दूसरे को नुकसान पहुँचाने वाला है?* अगर इस सवाल का जवाब नकारात्मक मिलता है तो आपत्ति उठाने वाला इन्सान जीवन विरोधी है।

इस तरह दूसरा पक्ष प्रस्तुत करते समय कहा जा सकता है कि युवावर्ग जब नाचता-गाता है, खेलता-कूदता है, घूमने फिरने या फिल्में देखने, संगीत सभा में या नाटकों में जाता है, तो अपना जीवन प्रेम प्रदर्शित करता है। इस तर्क में दम है। क्योंकि युवावर्ग हमेशा उस सबकी चाहना रखता है जो जीवन प्रेमी है। वे इस कदर जीवन्त और आशावादी होते हैं कि सत्ता के हज़ार दमन के बावजूद अपनी मौज-मस्ती तलाश लेते हैं। उम्र के साथ यह भावना बनी रहती है, पर व्यक्ति का नज़रिया अस्पष्ट बनता जाता है। वह मौज-मस्ती चाहता तो है, पर उससे डरता भी है।

जब मैं किसी को *जीवन विरोधी* कहता हूँ तो मेरा मतलब यह नहीं कि वे मृत्यु तलाशते हैं। मेरा मतलब यह है कि वे जीने से ज़्यादा डरते हैं, और मौत से कम। जीवन विरोधी होने का अर्थ मौत के पक्ष में होना भी नहीं है। जीवन विरोधी होने का मतलब है सत्ता के पक्ष में, गिरजे द्वारा बनाए गए धर्म के पक्ष में, दमन के पक्ष में, शोषण के पक्ष में होना। या कम से कम इनसे नियंत्रित होना।

मैं बात समेटकर कहता हूँः जीवन हितैषी होने का मतलब है आनन्द, खेल-कूद, प्रेम, रोचक काम, पसन्दीदा गतिविधियाँ, हँसी, संगीत, नृत्य, दूसरों का खयाल रखना और मानव में आस्था रखना। जीवन-विरोधी होने का अर्थ है- दायित्व, आज्ञापालन, लाभ और सत्ता के पक्ष में होना। मानव इतिहास में हमेशा ही जीवन विरोधी तत्व जीतते रहे हैं, और आगे भी तब तक जीतते रहेंगे जब तक हम अपने युवा वर्ग को वर्तमान वयस्कों की अवधारणाओं के अनुरूप ढालते रहेंगे।

सवाल : *क्या आप यह नहीं मानते कि अगर दुनिया के करोड़ों-करोड़ लोगों की आर्थिक समस्याओं का समाधान हो जाए तो मानवता की अधिकांश तकलीफें दूर हो जाएँगी?*

यह अहसास बड़ा असन्तोषजनक है कि हमारा घरेलू और स्कूली प्रशिक्षण अधिकांश लोगों को बेहद उबाऊ ज़िन्दगी की दिशा में ले जाता है। सच है कि दुकानों और दफ्तरों के निहायत उबाऊ काम भी आवश्यक हैं। पर जो कतई अनावश्यक है, वह है उन लोगों की मुर्दानगी जो अपनी काम की मेज़ों या बिक्री काउन्टरों से घृणा करते हैं। जिन्हें अतृप्त भावनाओं को शान्त करने के लिए बेहूदी

फिल्में, कुत्ता दौड़, घटिया पत्रिकाओं और सनसनीखेज़ समाचार पत्रों का सहारा लेना पड़ता है।

बड़ी गाड़ियों के करोड़पति मालिकों का आंतरिक जीवन कुलियों से अधिक सुखी नहीं होता। मेरा जवाब यह है कि अगर व्यक्ति की आत्मा जीवन-विरोधी, प्रेम-विरोधी हो तो वह आर्थिक सुविधाओं या सुरक्षा का सुख भी नहीं भोग सकता। गरीब और अमीर दोनों में ही एक बात समान होती है, वह यह कि दोनों ही एक ऐसी दुनिया के लिए तैयार किए जाते हैं जहाँ प्रेम को नापसन्द किया जाता है, जो प्रेम से डरता है, और जो प्रेम को एक अश्लील मज़ाक बना डालता है।

कई लोग जो यह मानते हैं कि दुनिया के अधिकांश लोग दुखी हैं, वे यह कहेंगे कि अगर आर्थिक समस्याओं का समाधान कर दिया जाए तो ज़िन्दगी सन्तोषजनक और आज़ाद बन जाएगी। मैं इस बात में विश्वास नहीं कर पाता। हमने आर्थिक मुक्ति की जितनी झलक देखी है वह खास उत्साहजनक नहीं है। ज़रूरी नहीं है कि हर घर में सुविधा-सम्पन्न रसोईघर उपलब्ध करवाने वाली आर्थिक मुक्ति, खुशहाली और ज्ञान की दिशा में ले ही जाएगी। हाँ, उससे कुछ सुविधा ज़रूर हासिल होती है जो कुछ समय बाद यांत्रिक रूप से स्वीकार ली जाती है। उसका भावनात्मक मूल्य तब खो जाता है।

चरित्र-निर्माण के हमारे तौर-तरीकों ने इंग्लैण्ड को भौतिक रूप से सफल देश ज़रूर बनाया है। हमारा जीवन स्तर उनके कारण बढ़ा है। पर हमारी सफलता यहीं तक सीमित है। ज़्यादातर लोग आज भी दुखी हैं। जी नहीं, अकेले आर्थिक समाधान से दुनिया का दुख, उसके अपराध, उसके कलंक, मनोरोग और बीमारियाँ खत्म नहीं होंगे।

सवाल : *दुखी दाम्पत्य का हमें क्या करना चाहिए?*

कुछ मध्यमवर्गीय माता-पिता ऐसी स्थिति में मनोविश्लेषण का सहारा लेते हैं जिससे अक्सर विवाह टूटते हैं। पर विश्लेषण अधिक सफल हो जाएँ तो भी हम दुनिया भर का विश्लेषण नहीं कर सकते। व्यक्तियों के इलाज के नाम पर जो कुछ किया जाता है वह छुट-पुट स्तर पर है और उसका आम जनता पर कोई असर नहीं पड़ता।

मानवता के लिए एक ही समाधान है। वह है बच्चों का सही तरह पालन-पोषण, न कि मनोरोगियों का इलाज करना। मुझे स्वीकारना पड़ेगा कि आज की वैवाहिक समस्याओं को सुलझाने का मेरे पास कोई जवाब नहीं है। यह सोचना बड़ा तकलीफदेह है कि श्री और श्रीमती ब्राउन साथ-साथ एक दुखद जीवन इसलिए बिता रहे हैं क्योंकि उनका पालन-पोषण जीवन विरोधी वातावरण में हुआ था। पर सच्चाई यह है कि इस बारे में कुछ भी नहीं किया जा सकता।

यह बात निराशावादी लग सकती है। पर आशावादी हम केवल तब बन सकते हैं जब हम अपने बच्चों की परवरिश इस तरह करें कि वे सेक्स और जीवन से नफरत न करें। जब-जब मैं किसी बच्चे की पिटाई देखता हूँ, यह देखता हूँ कि उससे झूठ बोला जा रहा है, एक ऐसा बच्चा देखता हूँ जो खुद के नग्न शरीर से शर्माता है, मैं इस दुखद अहसास से भर जाता हूँ कि ऐसा बच्चा बड़ा होकर घृणित पति या पत्नी में बदलेगा।

सवाल : *क्या आप ज़रूरी मानते हैं कि पति-पत्नी का बौद्धिक स्तर एक-सा होना चाहिए?*

विवाह में बौद्धिक पक्ष गौण होता है। दिमागों का मेल उबाऊ और ठण्डा मामला है। पर जहाँ दिल जुड़ते हैं वहाँ गर्मी होती है। एक दूसरे को देने का भाव पनपता है। प्रकृति एक स्त्री और पुरुष को उनकी बौद्धिक क्षमता के कारण प्रेमपाश में नहीं बाँधती। पर बाद में जब काम भावना कमज़ोर पड़ती है तो बौद्धिक रुचियों की समानता हो तो दम्पत्ति खुश रहते हैं। सुखी दाम्पत्य के लिए एक नुस्खा शायद असरदार रहता है। वह है एक सी विनोदी प्रवृत्ति।

सवाल : *सेक्स को लेकर चिन्ताओं का क्या कारण है? आजकल इतने नौजवान आत्महत्या क्यों करते हैं?*

मुझे शंका है कि कोई भी बच्चा सेक्स की फिक्र करता है। बाहरी सतह पर जो चिन्ताएँ नज़र आती हैं उसका स्रोत कहीं गहरा है। ये चिन्ताएँ काम भावनाओं को लेकर पाप के अहसास से जन्मती हैं। जिन बच्चों में हस्तमैथुन को लेकर अपराध-बोध नहीं जगाया जाता वे तेज़ और उत्साही होते हैं।

स्टैकल का कहना था, "आत्महत्या भी अन्तिम यौन क्रिया है।" जिस बच्चे में काम भावनाओं का दमन किया जाता है वह अपने शरीर और आत्मा से घृणा करने लगता है। उसके लिए आत्महत्या एक तार्किक प्रतिक्रिया होती है। अगर शरीर इतना ही घृणास्पद है तो जितनी जल्दी उससे छुटकारा पाया जाए उतना ही अच्छा है।

सवाल : *सामाजिक कार्यकर्ताओं के बारे में आपकी क्या राय है?*

जो सामाजिक कार्यकर्ता झुग्गी बस्तियों के समस्याग्रस्त बच्चों के घरों में जाते हैं उनकी मैं श्रद्धा करता हूँ। वे बेहतरीन काम करते हैं। पर सवाल यह है कि क्या उनका काम गहराई में जाता है?

उनसे यह अपेक्षा तो कोई नहीं करता कि वे उन बच्चों के माता-पिता का मनोविश्लेषण करें। यह भी सभी जानते हैं कि उनका काम निहायत मुश्किल है। वे उन झुग्गी बस्तियों को गायब भी नहीं कर सकते जो बच्चों को असामाजिक

बनाती हैं। न ही वे उन नासमझ माता-पिता को बदल सकते हैं जो गलत खान-पान द्वारा या सेक्स को एक छिपाने वाली अश्लील क्रिया के रूप में प्रस्तुत करके अपने बच्चों का विकास अवरुद्ध करते हैं।

समाज कल्याण के काम में जुड़े कार्यकर्ता सच में नायक-नायिका ही हैं। वे कोशिश करते हैं कि पीड़ित बच्चों को उनके खराब पारिवारिक जीवन की खामियों से उबार सकें। अगर ऐसे किसी कार्यकर्ता का आज़ादी में पक्का और पूरा विश्वास हो, तो भी वह झुग्गी बस्ती के उस घर में उन सिद्धान्तों को कैसे लागू करेगा? क्या उनमें से कोई किसी औरत से यह कह सकेगा, "देवीजी आपका बेटा इसलिए चोरी करता है क्योंकि उसका शराबी बाप उसे आए दिन पीटता है। इसलिए भी क्योंकि जब वह दो साल का था तब आपने उसे अपने शिश्न को छूने पर पीटा था। इसलिए भी कि आपने कभी उसके प्रति प्यार नहीं जताया।" क्या वह माँ यह सब समझ सकेगी?

मैं यह नहीं कहता कि माँ को फिर से शिक्षित नहीं किया जा सकता। पर इतना ज़रूर कहता हूँ कि एक सामाजिक कार्यकर्ता या किसी दूसरे व्यक्ति की बातचीत से स्थिति को बदला नहीं जा सकता। इन स्थितियों में समस्या का एक हिस्सा आर्थिक है। इसलिए झुग्गी बस्तियों के उत्थान द्वारा समस्याओं को जड़ से हटाने के कदम उठाने होंगे।

समरहिल के बारे में

सवाल : *समरहिल प्रणाली में बच्चे की इच्छाशक्ति कैसे विकसित होती है? अगर उसे हमेशा मनमर्ज़ी से चलने दिया जाए तो उसमें स्वनियंत्रण कैसे पनपेगा?*

समरहिल में बच्चे को हमेशा मनचाहा करने की छूट *नहीं* मिलती। बच्चों द्वारा बनाए गए नियम ही उन्हें चारों ओर से सीमा में बाँधते हैं। उसे केवल वही चीज़ें अपनी मर्ज़ी से करने दी जाती हैं जो केवल *उसे* प्रभावित करती हैं, किसी दूसरे को नहीं। वह चाहे तो सारे दिन खेल सकता है क्योंकि पढ़ना और खेलना सिर्फ उसे प्रभावित करते हैं। पर उसे कक्षा में पुंगी बजाने की छूट नहीं होती क्योंकि ऐसा करना दूसरों को भी प्रभावित करेगा।

इच्छाशक्ति भला है क्या? मैं दृढ़ संकल्प करूँ तो तम्बाकू पीना छोड़ सकता हूँ। पर इच्छाशक्ति से प्रेम नहीं कर सकता, न ही वनस्पतिशास्त्र का विषय पसन्द करने लग सकता हूँ। कोई भी व्यक्ति संकल्प कर खुद को अच्छा या फिर बुरा व्यक्ति ही बना सकता है।

किसी व्यक्ति को दृढ़ इच्छाशक्ति वाला इन्सान बनने के लिए प्रशिक्षित नहीं किया जा सकता। अगर आप बच्चों को आज़ादी में शिक्षित करते हैं तो उन्हें स्वयं के प्रति अधिक सजग ज़रूर बना सकते हैं क्योंकि आज़ादी से अवचेतन मन की ज़्यादातर चीज़ें चेतन स्तर पर उभर आती हैं। यही कारण है कि समरहिल के बच्चों में जीवन को लेकर शंकाएँ कम होती हैं। उन्हें *पता होता है* कि वे दरअसल क्या चाहते हैं। और मुझे लगता है कि वे उसे हासिल भी कर पाते हैं।

ध्यान रहे कि जिसे हम अक्सर कमज़ोर इच्छाशक्ति कहते हैं, वह दरअसल अरुचि का संकेत होता है। कोई भी कमज़ोर इन्सान, जिसे रुचि के बिना भी टैनिस खेलने पर बाध्य किया जा सकता है, दरअसल एक ऐसा व्यक्ति है जो अपनी खुद की रुचियों को ही नहीं जानता। गुलामी थोपने वाला अनुशासन ऐसे व्यक्ति को हमेशा कमज़ोर इच्छाशक्ति वाला और निरुपाय बनाए रखता है।

सवाल : *अगर समरहिल में बच्चा कोई खतरनाक काम करता है तो क्या आप इसकी इजाज़त देते हैं?*

बिल्कुल नहीं। एक बात लोग अक्सर नहीं समझते कि बच्चों को आज़ादी देने का अर्थ यह कतई नहीं होता कि उन्हें बेवकूफी करने की छूट मिले। हम अपने छोटे बच्चों को उनके सोने का समय खुद तय नहीं करने देते। हम उन्हें मशीनों, गाड़ियों, टूटे काँच या गहरे पानी के खतरों से बचाते हैं। किसी बच्चे को ऐसी कोई ज़िम्मेदारी नहीं सौंपी जानी चाहिए जिसे निभाने के लिए वह तैयार न हो। पर एक बात ध्यान रहे कि बच्चे जिन खतरों का सामना करते हैं उनमें से ज़्यादातर गलत शिक्षा का नतीजा होते हैं। जो बच्चा आग के साथ खतरनाक हरकतें करता है उसे आग की सच्चाई जानने से दरअसल रोका गया है।

सवाल : *क्या समरहिल के बच्चों को घर की याद सताती है?*

मैंने पाया है कि जब कभी कोई दुखी माँ किसी नए बच्चे को समरहिल लाती है तो बच्चा उससे लिपटकर ज़ारज़ार रोता है, घर वापस ले जाने की माँग करता है। मैंने यह भी पाया है अगर बच्चा जी भरकर चीखे-चिल्लाए नहीं तो माँ झल्लाती है। वह *चाहती* है कि उसके बच्चे को घर की याद आए। जितनी बार घर को याद करेगा, सिद्ध होगा कि बच्चा उससे उतना ही प्यार करता है। अक्सर माँ के जाने के पाँच मिनट बाद ही वह बच्चा खुशी से खेलता नज़र आता है।

यह कहना कठिन है कि एक दुखी घर से आए बच्चे को स्कूल शुरू करते समय घर की क्यों याद आती है। सम्भावना तो यही है कि घर में उसे दुश्चिन्ताएँ घेरे रहती होंगी। वह शायद यह सोचता हो कि इस समय घर में क्या हो रहा है? ऐसा सोचने का कारण यह हो सकता है कि उसकी माँ, जिसे अपने पति का स्नेह नहीं मिलता, अपना पूरा प्यार या घृणा बच्चे की ओर उड़ेलती है।

घर की बेहद याद आना अमूमन इस बात का सूचक है कि बच्चे का घर अच्छा नहीं है, ऐसा घर है जहाँ घृणा अधिक है। बच्चे को घर की कमी इसलिए नहीं अखरती कि वहाँ प्रेम है, बल्कि इसलिए कि वहाँ तकरार है और उसे सुरक्षा भी मिलती है। इसमें विरोधाभास की ध्वनि आती है, लेकिन वह है नहीं। ध्यान रहे कि घर जितना दुखी होगा बच्चा उतना ही संरक्षण तलाशेगा। उसके जीवन को स्थिरता देने वाली कोई चीज़ नहीं है। इसीलिए वह उस चीज़ में स्थायित्व तलाशता है जिसे वह 'घर' कहता है। घर से दूर रहने पर वह मन में उसकी एक आदर्श छवि बनाता है। उसे अपने घर की नहीं, उस घर की याद सताती है जिसकी उसके मन में *लालसा* है।

सवाल : *क्या आप समरहिल में कमज़ोर बच्चों को भी दाखिला देते हैं?*

बेशक। यह इस बात पर निर्भर करता है कि आप किसे कमज़ोर या पिछड़ा कहते हैं। हम मानसिक रूप से विकलांग बच्चों को नहीं लेते। पर स्कूल में जिन्हें पिछड़ा हुआ कहा जाता है, उनका किस्सा दरअसल कुछ दूसरा ही होता है।

समरहिल के पिछड़ेपन के मानदण्डों का परीक्षाओं, जोड़ बाकी या अंकों से कोई लेना-देना नहीं है। कई बार पिछड़ेपन का बस इतना भर अर्थ होता है कि बच्चे के अन्तस में एक अचेतन द्वन्द्व है या फिर उसे अपराध-बोध घेरे हुए है। अगर वह लगातार इस सवाल का सामना कर रहा हो कि, **'**मैं सच में दुष्ट हूँ या नहीं?**'** तो वह गणित या इतिहास में रुचि भला कैसे ले सकता है?

मैं इस सवाल का जवाब निजी अहसास के साथ देता हूँ क्योंकि बचपन में मैं सीखने में कोई रुचि नहीं लेता था। मेरी जेबों में लोहे या पीतल के टुकड़े या पुर्ज़े भरे रहते थे। मेरी नज़रें पाठ्यपुस्तक पर होतीं पर मन हमेशा कलपुर्ज़ों में भटकता था। मैंने बिरले ही कोई कमज़ोर लड़के या लड़की को देखा है जिसमें रचनात्मक काम करने की क्षमताएँ न हों। और फिर स्कूली विषयों में प्रगति के आधार पर किसी छात्र या छात्रा को पिछड़ा मानना न केवल निरर्थक है बल्कि घातक भी है।

सवाल : *अगर कोई बच्चा स्कूल की आम सभा द्वारा लगाए गए जुर्माने को न भरे तो क्या किया जाता है?*

बच्चे ऐसा कभी नहीं करते हैं। पर हाँ, अगर उन्हें यह लगे कि उनके साथ अन्याय हुआ है तो शायद वे ऐसा करें। पर हमारे यहाँ अपील की प्रणाली है जो इस अन्याय के भाव से निपटने में मदद करती है।

सवाल : *आप कहते हैं कि समरहिल के बच्चों के दिमाग बड़े स्वच्छ हैं। इससे आपका मतलब क्या है?*

स्वच्छ दिमाग का मतलब है वह व्यक्ति जिसे किसी बात से धक्का न पहुँचे। धक्का पहुँचने का मतलब है कि कुछ भावनाओं का दमन किया गया है। क्योंकि जो चीज़ इतना चौंका देती है उसमें बेहद रुचि जागती है।

विक्टोरियन युग में महिलाएँ पैर का नाम सुनते ही चौंक जाती थीं। ज़ाहिर है कि पैर से जुड़ी चीज़ों में उनकी असामान्य रुचि थी। पैर उनके लिए यौन से जुड़े थे। और यौन भावनाओं की बातचीत को लेकर तमाम वर्जनाएँ थीं। इसलिए समरहिल में जहाँ यौन या काम भावनाओं को पाप की धारणा से जोड़कर नहीं देखा जाता बच्चे इन विषयों पर गुपचुप बातें नहीं करते। यहाँ गन्दी फुसफुसाहट नहीं होती। हमारे बच्चे जिस तरह शेष सभी चीज़ों के बारे में संजीदा हैं, उतने ही संजीदा वे इन तथाकथित वर्जित बातों में भी हैं।

सवाल : *सात साल का विली जब समरहिल में पहला सत्र बिताकर आया तो उसकी भाषा इतनी खराब हो चुकी थी कि पड़ोसियों ने अपने बच्चों को उससे खेलने से ही मना कर दिया। इस बारे में मैं क्या करूँ?*

विली के लिए दुर्भाग्यपूर्ण है, दुखदायी है। पर विकल्प क्या है? अगर आपके पड़ोसी *साला* या *जाहिल* से सकते में आ जाते हैं तो उन्होंने अपने आप को बेहद दबाकर रखा हुआ है। ऐसे लोगों से विली का दूर रहना ही बेहतर है।

सवाल : *समरहिल के बच्चे फिल्मों के बारे में क्या सोचते हैं?*

वे सभी तरह की फिल्में देखते हैं। हमारे यहाँ कोई सैंसरशिप नहीं है। इसका नतीजा यह होता है कि जिस समय वे स्कूल से निकलते हैं, तब तक फिल्मों के बारे में उनकी समझ अच्छी हो जाती है। अक्सर बड़े बच्चे यह कहकर फिल्म देखने जाने से मना कर देते हैं कि फिल्म खास मज़ेदार नहीं लग रही। बड़े बच्चों ने फ्रांस, इटली और जर्मनी की तमाम फिल्में देख रखी हैं और वे हॉलीवुड की बनी औसत फिल्मों की आलोचना करते हैं। छोटे बच्चे प्रेम कथाओं की फिल्में देखना पसन्द नहीं करते।

सवाल : *जो बच्चा पलटकर जवाब दे, ज़बान लड़ाए, उसका क्या किया जाए?*

समरहिल के बच्चे बदतमीज़ी से पलटकर जवाब नहीं देते। बच्चा ऐसा तभी करता है जब कोई 'सम्माननीय व्यक्ति' उसे निहायत नीचा मानकर पेश आता है। समरहिल में हम बच्चों की भाषा ही बोलते हैं। अगर कोई शिक्षक पलटकर जवाब देने की शिकायत करे, तो हम समझ जाएँगे कि वह बेकार है।

सवाल : *जो बच्चा दवा न ले उसका आप क्या करते हैं?*

मैं नहीं जानता। समरहिल में कोई ऐसा बच्चा नहीं रहा जो अपनी दवा नहीं लेना चाहता हो। हमारे यहाँ खाना-पीना संतुलित होता है सो बीमारी समस्या नहीं है।

सवाल : *क्या समरहिल के बड़े बच्चे अपने से छोटे बच्चों का ध्यान रखते हैं?*

जी नहीं। छोटे बच्चों पर ध्यान देने की कोई ज़रूरत नहीं होती। वे अपने ही ज़रूरी मामलों में उलझे रहते हैं।

सवाल : *क्या समरहिल में कभी अश्वेत बच्चे भी पढ़ने आए हैं?*

हाँ, हमारे यहाँ दो अश्वेत बच्चे थे। और जहाँ तक हमने देखा, दूसरे बच्चे उनकी चमड़ी के रंग के प्रति सचेत नहीं थे। एक अश्वेत बच्चा कुछ दादा किस्म का था। बच्चे उसे नापसन्द करते थे। पर दूसरा बड़ा लोकप्रिय था।

सवाल : *क्या समरहिल में बॉय स्काउट हैं?*

नहीं, मुझे नहीं लगता कि हमारे बच्चे हर दिन एक भला काम करने के विचार को हज़म भी कर पाएँगे। हर दिन सचेत होकर एक 'भला काम' करने में बनावटीपन की बू आती है। बॉय स्काउट आन्दोलन में कई अच्छी बातें हैं, पर नैतिक उत्थान, सही-गलत और शुद्धता के बुर्जुआ विचारों से इसे काफी नुकसान पहुँचा है।

अपने स्कूल में बॉय स्काउटों पर मैंने कोई मत कभी ज़ाहिर नहीं किया है। दूसरी ओर किसी बच्चे ने भी उसमें कोई रुचि नहीं दर्शाई है।

सवाल : *एक धार्मिक पारिवारिक परिवेश में पले बच्चे के बारे में आपकी क्या राय है? क्या आप समरहिल में बच्चों को अपना धर्म पालन करने की इजाज़त देते हैं?*

जी हाँ, बच्चा बिना डर, बिना शिक्षकों या बच्चों की टीका-टिप्पणी के ऐसा कर सकता है। पर मैंने पाया है कि मुक्त वातावरण में बच्चे धार्मिक क्रियाएँ या प्रार्थना आदि करना ही नहीं चाहते।

कुछ नए बच्चे चन्द इतवार तक गिरजा जाते हैं और फिर जाना बन्द कर देते हैं। गिरजा बेहद उबाऊ है। मुझे ऐसा कोई संकेत नहीं मिला है कि बच्चों में पूजा-अर्चना की वृत्ति स्वाभाविक रूप से होती है। जब पाप की भावना धुल जाए तो प्रार्थना का इस्तेमाल भी नहीं होता।

धार्मिक परिवारों के बच्चे अमूमन पूरी तरह ईमानदार नहीं होते। वे दमित होते हैं। किसी भी ऐसी धार्मिक प्रणाली में ऐसा ही होना है, जहाँ जीवन के प्रति प्रेम का मूल भाव नष्ट हो गया और जो अपना पूरा ध्यान मौत के डर पर केन्द्रित रखता हो। बच्चों में खुदा का खौफ तो बैठाया जा सकता है, उसके प्रति प्रेम नहीं। आज़ाद बच्चों को धर्म की दरकार इसलिए नहीं होती क्योंकि उनका जीवन आध्यात्मिक रचनात्मकता से भरपूर होता है।

सवाल : *क्या समरहिल के बच्चे राजनीति में रुचि लेते हैं?*

नहीं। शायद इसलिए क्योंकि वे सभी मध्यवर्गीय परिवारों से हैं जिन्होंने कभी गरीबी का अनुभव नहीं किया है। मैंने नियम बनाया है कि कोई भी शिक्षक बच्चों को राजनीतिक रूप से प्रभावित नहीं करेंगे। धर्म की तरह राजनीति भी व्यक्तिगत चुनाव का मामला है। बच्चे को बड़े होकर यह चुनाव खुद करना चाहिए। यहाँ का कोई छात्र प्रधानमंत्री बन जाए तो मैं समरहिल को एक असफल स्कूल समझूँगा।

सवाल : *क्या समरहिल के छात्र बाद में सेना में भी गए हैं?*

अब तक केवल एक छात्र ही वायु सेना में गया है। सम्भव है कि आज़ाद बच्चों को सेना निहायत रचनात्मकता विहीन लगती हो। आखिर युद्ध का मतलब है विनाश। समरहिल के बच्चे शायद अपने देश के लिए उसी सहजता से लड़ें जैसे दूसरे बच्चे, पर सम्भव है कि वे यह साफ-साफ समझना चाहें कि आखिर वे लड़ किसलिए रहे हैं। हमारे पूर्व छात्रों ने द्वितीय विश्व युद्ध में हिस्सा लिया और कुछ ने अपनी जान भी दी।

सवाल : *आपके स्कूल में लड़के-लड़कियाँ अलग-अलग कमरों में क्यों सोते हैं?*

समरहिल इंग्लैण्ड में स्थित है। और उसे यहाँ के कानूनों और सामाजिक व्यवहारों को मानना ही होता है।

बच्चों के पालन के विषय में

सवाल : *जो माता-पिता आपकी किताबें पढ़ते हैं या आपके भाषण सुनते हैं, क्या वे कुछ बातें समझने के कारण अपने बच्चों से भिन्न और बेहतर व्यवहार करते हैं? क्या माता-पिता को अधिक जानकारी दी जाए तो क्षतिग्रस्त बच्चों का इलाज हो सकेगा?*

जिस माँ में स्वामित्व का भाव बेहद ज़्यादा है वह इस किताब को पढ़कर अपराध-बोध से भर सकती है। वह झल्लाकर कह सकती है मेरा खुद पर बस नहीं चलता। मैं अपने नन्हें का जीवन बर्बाद नहीं करना चाहती। आपके लिए परेशानी को पहचानना बड़ा आसान है, पर इसका इलाज आखिर क्या है? वह सच ही कहती है।

इलाज *भला क्या है*? या कहें क्या इलाज *है भी*। यह सवाल बड़ा टेढ़ा है।

जिस महिला का जीवन उबाऊ हो, तमाम किस्म के खौफों से भरा हो, उसका क्या इलाज हो सकता है? ऐसे पुरुष का क्या इलाज है जो अपने बदतमीज़ बेटे को फन्ने खाँ समझता हो? पर इससे भी टेढ़ा सवाल यह है कि उस माँ या पिता का क्या इलाज है जो अपने कृत्यों से पूरी तरह अनभिज्ञ हैं? और अगर उन्हें सुझाया जाए कि वे कुछ गलत कर रहे हैं तो वे भड़क उठते हैं।

अकेले जानकारी से कुछ नहीं होता। जब तक माता-पिता इस ज्ञान को स्वीकारने हेतु *भावनात्मक रूप से तैयार न हों* और उनमें यह क्षमता न हो कि नए ज्ञान के अनुरूप कुछ कर सकें, तब तक कुछ नहीं हो सकता।

सवाल : *आप बच्चे के खुश रहने की ज़रूरत पर इतना क्यों बोलते हैं? क्या सच में कोई भी सुखी है?*

यह सवाल बड़ा टेढ़ा है, क्योंकि शब्द बड़ा भरमाते हैं। यह सच है कि हममें से कोई भी हमेशा सुखी नहीं रहता। हमारे दाँतों में दर्द हो सकता है, हमारा प्रेम प्रसंग खटाई में पड़ सकता है, हमें अपना काम बेहद उबाऊ भी लग सकता है।

सुख शब्द का अगर कोई अर्थ है तो वह है आन्तरिक कल्याण का बोध। एक संतुलन का अहसास। जीवन से संतोष का भाव। ये तमाम भाव तभी होते हैं जब व्यक्ति आज़ादी का अनुभव करता है।

सवाल : *आज़ाद बच्चों के चेहरे भयमुक्त होते हैं। अनुशासित बच्चे दबे, दुखी और सहमे-सहमे लगते हैं।*

सुख को हम एक ऐसी स्थिति के रूप में परिभाषित कर सकते हैं जिसमें दमन का अहसास कम से कम हो। एक सुखी परिवार ऐसे घर में रहता है जहाँ प्यार बसता हो। दुखी परिवार तनावग्रस्त रहता है।

मैं सुख को सबसे महत्वपूर्ण इसलिए मानता हूँ क्योंकि मैं विकास को सबसे ज़रूरी मानता हूँ। आज़ादी और सन्तुष्टि के भाव के साथ दशमलव के भिन्न से बेखबर रहना बेहतर है, न कि स्कूली परीक्षाएँ दे चेहरे को मुहाँसों से भर लेना। मैंने किसी भी प्रसन्न और आज़ाद बच्चे के चेहरे पर मुहाँसे नहीं देखे हैं।

सवाल : *अगर किसी बच्चे को पूरी आज़ादी दी जाए तो उसे यह अहसास होने में कितना समय लगेगा कि स्व-अनुशासन जीने के लिए बेहद ज़रूरी है? या उसे यह अहसास कभी होगा भी या नहीं?*

पूरी आज़ादी जैसी कोई चीज़ होती ही नहीं है। जो कोई किसी को हर समय उसकी मनमर्ज़ी करने देता है, वह एक खतरनाक डगर पर बढ़ रहा है।

किसी भी इन्सान को पूरी सामाजिक आज़ादी नहीं होती क्योंकि हरेक को दूसरों के अधिकारों का भी सम्मान करना पड़ता है। पर व्यक्तिगत आज़ादी हरेक को मिलनी चाहिए। साफ-साफ कहें तो यूँ कि किसी को यह अधिकार नहीं कि वह किसी बच्चे को लैटिन पढ़ने पर मजबूर करे। इसलिए क्योंकि यह व्यक्तिगत चुनाव की बात है। पर अगर लैटिन भाषा की कक्षा चल रही हो और उसमें कोई हर समय गड़बड़ करे तो उसे कक्षा से बाहर कर देना चाहिए क्योंकि तब वह दूसरों की आज़ादी में बाधा पहुँचा रही होगी।

जहाँ तक स्व-अनुशासन की बात है तो वह कुछ अस्पष्ट-सी चीज़ है। क्योंकि अक्सर इसका मतलब होता है वयस्कों द्वारा लादे गए नैतिक विचारों के अनुसार खुद को अनुशासित करना। जो वास्तविक स्व-अनुशासन है उसमें *न तो* दमन

होता है, *न ही* दूसरों के विचारों की स्वीकृति। उसमें दूसरों के अधिकारों और खुशी का पर्याप्त सम्मान होता है। यह व्यक्ति को उस दिशा में ले जाता है जहाँ वह दूसरों के नज़रिए के सम्मान में कुछ चीज़ें समझबूझकर त्यागता है, ताकि वह सबके साथ शान्ति से रह सके।

सवाल : *क्या आप सच में मानते हैं कि स्वभाव से आलसी लड़के को अपनी ढीली-ढाली चाल से जो चाहे करने देना और यों समय बर्बाद करने देना चाहिए? जब उसे पढ़ाई लिखाई करना ही नापसन्द हो तो आप उसे काम पर कैसे लगाते हैं?*

सच यह है कि आलस बच्चों में होता ही नहीं। आलसी बच्चा या तो शारीरिक रूप से बीमार है या उसकी उन कामों में कोई रुचि नहीं है जो वयस्कों को लगता है उसे करने चाहिए।

मैंने ऐसा कोई बच्चा नहीं देखा जो बारह साल की उम्र से पहले समरहिल आया हो और जिसे आलसी कहा जा सकता हो। हाँ, दूसरे अनुशासित स्कूलों से आने वाले बच्चे समरहिल में 'आलसी' बने रहते हैं, जब तक वे अपनी शिक्षा-दीक्षा से पूरी तरह उबर नहीं जाते। मैं उन्हें कभी भी ऐसे काम पर नहीं लगाता हूँ जो उन्हें नापसन्द हो या जिसके लिए वे तैयार न हों। हमारे आपकी ही तरह उसे भी बाद में तमाम ऐसे काम करने पड़ेंगे जो उसे सख्त नापसन्द हैं। पर अगर उसे इस समय अपने खेल-कूद का चरण भरपूर जी लेने दिया जाए तो वह बाद में हर तरह की परेशानी का सामना कर सकेगा। जहाँ तक मुझे पता है, समरहिल के किसी भी पूर्व छात्र पर आलसी होने का आरोप नहीं लगाया गया है।

सवाल : *क्या आपको लगता है कि बच्चों को दुलारा-पुचकारा जाना चाहिए?*

जब मेरी बिटिया ज़ोई बहुत छोटी थी वह दरवाज़े के बन्द होने की आवाज़ से एक बार चौंक गई और रोने लगी। मेरे पत्नी ने उसे गोदी में उठाया और प्यार से गले लगाया। उसे कुछ ऐसे पकड़ा कि वह हाथ-पैर मार सके।

जब भी बच्चे में किसी तरह की जकड़न दिखाई दे तो माता-पिता को उसके साथ खेलना चाहिए। यह खेल ऐसा हो जिससे वह अपनी माँसपेशियाँ हिलाए-डुलाए। चार-पाँच साल के बच्चों के साथ नकली कुश्ती बड़ी असरकार रहती है। इस कुश्ती में मैं हमेशा हारता हूँ। इसी तरह भावनात्मक या शारीरिक जकड़न को खत्म करने में ज़ोर से हँसना भी असरकारी रहता है। स्वस्थ बच्चे किलकारी भरते हैं, खूब हँसते हैं। पसलियों के पास गुदगुदी बच्चों को खुश करती है। हाँ, यहाँ यह भी बताना ज़रूरी है कि कुछ बाल-मनोवैज्ञानिक बच्चे को ज़्यादा छूने के विरुद्ध हैं। उनके हिसाब से इससे बच्चा माँ या पिता से बंध जाता है, पर यह सब बकवास है। मुझे लगता है कि माँ-बाप को बच्चे को खूब दुलारना चाहिए, थपथपाना, गुदगुदाना चाहिए।

जीवन से विमुख मनोवैज्ञानिकों की सलाह हमें नहीं माननी चाहिए जो यह कहते हों कि बच्चे को अपने साथ बिस्तर पर सुलाना या उसे गुदगुदाना ठीक नहीं है। इस प्रतिबंध के पीछे का अचेतन विचार यह होता है कि इस तरह की छुअन से बच्चे में कामेच्छाएँ जाग जाएँगी। इसमें खतरा तभी है अगर माता-पिता इतने मनोरोगी हैं कि वे बच्चे को छूने पर मज़ा पाते हैं। लेकिन मैं सामान्य अभिभावकों के लिए लिख रहा हूँ। ऐसे अभिभावकों के लिए नहीं जो अब भी बच्चे हैं।

सवाल : *प्रगतिशील माता-पिता दूसरे बच्चों के लड़ाकापन का क्या करें?*

अगर स्व-नियंत्रित विली के माता-पिता उसे किसी सरकारी स्कूल में भेजते हैं, जहाँ उसे दूसरे बच्चों के आक्रामक व्यवहार और द्वेष का सामना करना पड़ेगा, क्या ऐसे में विली के माता-पिता विली को खुद यह अनुभव करने देंगे कि घृणा और हिंसा से उसे कितनी चोट पहुँचती है?

जब पीटर तीनेक साल का हुआ तो उसके पिता ने मुझे कहा कि वे उसे मुक्केबाज़ी सिखाने वाले हैं, ताकि वह दूसरों की नफरत का सामना कर सके। हम एक तथाकथित ईसाई दुनिया में रहते हैं जहाँ चाँटा लगाने पर दूसरा गाल सामने करना प्रेम और उदारता का नहीं बल्कि कायरता का प्रतीक माना जाता है। ज़ाहिर है कि पीटर के पिता सही कह रहे थे। अगर हम कुछ सकारात्मक कदम नहीं उठाते तो हमारे स्व-नियंत्रित बच्चे कई तरह की परेशानियों का सामना करेंगे।

सवाल : *शारीरिक सज़ा के बारे में आपकी क्या राय है?*

शारीरिक दण्ड खराब है क्योंकि इसमें घृणा और क्रूरता शामिल है। इससे सज़ा देने वाले और पाने वाले में नफरत जन्मती है। यह एक अवचेतन यौन विकृति है। ऐसे समाजों में जहाँ हस्तमैथुन वर्जित है वहाँ हाथ (जिससे हस्तमैथुन किया जाता है) पर सज़ा दी जाती है। लड़कों के स्कूल में जहाँ समलैंगिकता को दबाया जाता है वहाँ नितम्बों (इच्छा के स्थान) पर मारा जाता है। धर्म भीरू इलाकों में शरीर के प्रति घृणा शारीरिक दण्ड को बड़ा लोकप्रिय बनाती है।

दरअसल शारीरिक सज़ा हमेशा ही अपनी भावनाएँ दूसरों पर आरोपित करने का कृत्य होता है। सज़ा देने वाला खुद से नफरत करता है और वही नफरत वह बच्चों की दिशा में आगे बढ़ाता है। जो माँ या बाप बच्चों की ठुकाई करते हैं, वे खुद से नफरत करते हैं। यही कारण है कि वे अपने बच्चों से भी नफरत करते हैं। जब कोई शिक्षक बड़ी कक्षा में डण्डे का इस्तेमाल करता है तो मामला नफरत से ज़्यादा सुविधा का होता है। एक साथ ढेरों बच्चों को अनुशासित करने का यही आसान तरीका है। होना यह चाहिए कि ऐसी बड़ी कक्षाओं पर पाबन्दी लगनी चाहिए जहाँ बच्चे बहुत ज़्यादा हों। अगर स्कूल ऐसे हों जहाँ खेलने कूदने, सीखने या न सीखने की आज़ादी हो तो वहाँ धुनाई स्वतः ही बन्द हो जाएगी। जिन स्कूलों में शिक्षक

अपना काम ठीक से जानते समझते हैं, वहाँ कभी भी शारीरिक सज़ा नहीं दी जाती।

सवाल : *क्या आप सच में यह मानते हैं कि गलत आदतें छुड़ाने का सबसे अच्छा तरीका है उन्हें दुराचार करते रहने दिया जाए?*

दुराचार? किसकी राय में दुराचार? गलत आदतें? कौन-सी गलत आदतें? आप शायद हस्तमैथुन की ओर इशारा कर रहे हैं। किसी आदत को जबरन छुड़ाने की कोशिश उसका इलाज नहीं है। किसी भी आदत को छुड़ाने का एक ही तरीका है- बच्चे को उसकी उस आदत में रुचि को जी लेने देना। जिन बच्चों को हस्तमैथुन करने की छूट होती है वे प्रतिबंध लगे बच्चों की तुलना में इस क्रिया में कहीं कम शामिल होते हैं।

मार-पिटाई से आदतें लम्बी खिंचती हैं। बच्चों के हाथ बाँधने पर वे जीवन भर के लिए विकृत हस्तमैथुन करने वाले बन जाते हैं। तथाकथित बुरी आदतें दरअसल बुरी आदतें नहीं हैं। वे नैसर्गिक क्रियाएँ हैं। तथाकथित बुरी आदतें माता-पिता की अज्ञानता और नफरत का नतीजा होती हैं।

सवाल : *क्या स्कूल में गलत तरीकों से पढ़ाने के असर को घर में सही पालन-पोषण से सुधारा जा सकता है?*

मोटे तौर पर यह बात सही है। घर की आवाज़ स्कूल की आवाज़ से कहीं ज़्यादा दमदार होती है। अगर घर में डर और सज़ा न हो तो बच्चा यह विश्वास नहीं करेगा कि स्कूल में जो कुछ होता है या कहा जाता है वह सच है।

माता-पिता को स्कूल में जो कमियाँ लगती हैं उनके बारे में बच्चों से बातचीत करनी चाहिए। माता-पिता अक्सर खराब से खराब शिक्षकों के प्रति भी एक बेवकूफी भरी निष्ठा जताते हैं।

सवाल : *परी-कथाओं और सान्टा क्लॉज़ आदि के प्रति आपका क्या नज़रिया है?*

बच्चों को परी-कथाएँ बेहद पसन्द हैं। उन्हें समर्थन देने का यही कारण पर्याप्त है। और सान्टा क्लॉज़ की खास चिन्ता करने की ज़रूरत नहीं है क्योंकि बच्चे जल्दी ही उसकी सच्चाई जान जाते हैं। मैं खुद कभी बच्चों को सान्टा की सच्चाई नहीं बताता। अगर मैं यह कोशिश करूँ तो हरेक चार साल का बच्चा मुझ पर हँसे।

सवाल : *आप रचनात्मकता को मिल्कियत से बड़ा मानते हैं। फिर भी जब बच्चा खुद कुछ बनाता है तो वह चीज़ उसकी मिल्कियत बन जाती है। वह उसे ज़रूरत से ज़्यादा मूल्यवान समझने लगता है। इस बारे में आप क्या कहते हैं?*

सच्चाई यह है कि ऐसा होता नहीं है। बच्चा जो खुद बनाता है उसे एक दिन या एक सप्ताह भर के लिए कीमती मानता है। बच्चे में स्वामित्व का भाव बहुत

मज़बूत नहीं होता। वह अपनी नई साइकिल बरसात में भीगते छोड़ सकता है, अपने कपड़े इधर-उधर पटक सकता है। असली मज़ा तो बनाने में है। एक सच्चा कलाकार कृति के समाप्त होने पर उसमें कोई रुचि नहीं लेता। रचनाकार को अपनी कलाकृति कभी बहुत पसन्द नहीं आती क्योंकि उसका लक्ष्य तो श्रेष्ठता है।

सवाल : *आप ऐसे बच्चे का क्या करते हैं, जो किसी भी चीज़ में स्थाई रूप से नहीं लगता? कुछ समय संगीत में फिर नृत्य फिर किसी तीसरी चीज़ में रुचि लेता है?*

ज़िन्दगी इसी का नाम है। अपने समय में मैंने पहले फोटोग्राफी फिर जिल्द बँधाई व लकड़ी का काम और पीतल का काम किया है। जीवन हमारी छोटी-बड़ी रुचियों का मेल है। कई सालों तक मैं स्याही से रेखा चित्र बनाता रहा और तब मुझे पता चला कि मैं दसवें दर्ज़े का कलाकार भी नहीं हूँ। और मैंने यह काम छोड़ दिया।

बच्चे की रुचियाँ विविध होती हैं। वह तरह-तरह की चीज़ें करता है। इसी तरह वह सीखता भी है। हमारे लड़के दिनों दिन तक नावें बनाते हैं। पर अगर कोई विमान चालक स्कूल में आ जाए तो वे नावें अधूरी छोड़ हवाई जहाज़ बनाने लगते हैं। हम कभी बच्चे को अपने काम पूरा करने का सुझाव नहीं देते। अगर उसकी रुचि ही मर गई हो तो काम खत्म करने का दबाव डालना गलत होगा।

सवाल : *क्या बच्चों पर कटाक्ष करना चाहिए? क्या इससे बच्चे में विनोद-प्रियता विकसित करने में मदद मिलेगी?*

जी नहीं, कटाक्ष और विनोद में कोई रिश्ता नहीं है। विनोद प्यार का मामला है और कटाक्ष का रिश्ता नफरत से होता है। बच्चे के प्रति कटाक्ष करने से उसमें हीन भावना जागती है। वह अपमानित महसूस करता है। बेहूदा शिक्षक या माता-पिता ही बच्चे पर ताने कस सकते हैं।

सवाल : *मेरा बच्चा हमेशा पूछता है, मैं क्या करूँ, क्या खेलूँ? मैं क्या जवाब दूँ? क्या बच्चे को खेल सुझाना गलत है?*

अगर बच्चे को नए और रोचक काम करने को दें तो अच्छा है। पर ज़रूरी नहीं है कि वह जो काम खुद के लिए तलाशता है वही उसके लिए सबसे बढ़िया है। इसलिए समरहिल का कोई भी शिक्षक बच्चे को कुछ भी करने की सलाह नहीं देता। हमारे शिक्षक उन बच्चों की मदद करते हैं जो किसी चीज़ को *कैसे किया* या बनाया जाए की तकनीकी जानकारी चाहते हैं।

सवाल : *क्या बच्चे के प्रति अपना प्रेम जताने के लिए उपहार देने चाहिए?*

नहीं। प्रेम को बाहरी प्रदर्शन की ज़रूरत नहीं होती। पर बच्चों को उनके जन्मदिन, क्रिसमस आदि पर तोहफे ज़रूर दिए जाने चाहिए। पर उससे कृतज्ञता की अपेक्षा नहीं करनी चाहिए।

सवाल : *मेरा बेटा स्कूल से गोल मारता है। इस बारे में मैं क्या करूँ?*

मेरा अनुमान है कि उसका स्कूल उबाऊ है और आपका बच्चा सक्रिय। अमूमन स्कूल से छुट्टी मारने का मतलब है कि स्कूल ठीक नहीं है। सम्भव है तो बच्चे को ऐसे स्कूल में भेजो जहाँ अधिक आज़ादी, रचनात्मकता और प्रेम हो।

सवाल : *क्या मैं बच्चे को एक गुल्लक दे बचत की अवधारणा सिखाऊँ?*

नहीं। बच्चे आज से आगे नहीं देख सकते। कुछ बड़ा हो जाने पर वह कोई महँगी चीज़ लेना चाहे तो बिना किसी के सिखाए समझाए भी पैसा बचाना सीखेगा।

मैं यह बात ज़ोर देकर कहना चाहूँगा कि बच्चों को अपनी गति से बढ़ने देना चाहिए। कई माता-पिता इस रफ्तार को तेज़ करने की भारी गलती करते हैं। बच्चे की कभी उस काम में कोई मदद न करें जो वह खुद कर सकता है। जब कोई नन्हीं कुर्सी पर चढ़ने की कोशिश करती है, तो स्नेहिल माँ या पिता उसे झट उठाकर कुर्सी पर बिठा देते हैं। ऐसा करने के साथ वे उसकी सबसे बड़ी खुशी भी छीन लेते हैं। वह है किसी बाधा को लाँघने की खुशी।

सवाल : *अगर कोई नौ वर्षीय लड़का मेरी मेज़-कुर्सी पर कीलें ठोकना चाहे तो क्या करूँ?*

उससे हथौड़ा ले लें। उसे बताएँ कि मेज़ कुर्सी आपकी है और उसे दूसरों की चीज़ों को नुकसान पहुँचाने का हक नहीं है। और अगर बच्चा फिर भी यह बन्द न करे तो अपना फर्नीचर बेच दें और उस पैसे से मनोचिकित्सक के पास जाएँ। ताकि वह आपको समझा सके कि आपने अपने बेटे को समस्याग्रस्त कैसे बनाया है। कोई भी प्रसन्न बच्चा फर्नीचर को नुकसान नहीं पहुँचाना चाहेगा, बशर्ते घर में कीलें ठोकने के लिए दूसरी चीज़ें मौजूद हों। इस तरह के नुकसान को रोकने का पहला कदम है बच्चे को लकड़ी के टुकड़े और कीलें ला देना। अगर वह फिर भी आपके फर्नीचर में कीलें ठोकना चाहे तो ज़ाहिर है कि वह आपको नापसन्द करता है आपको नाराज़ करना चाहता है।

सवाल : *ज़िद्दी और मुँह फुलाए रहने वाले बच्चे का क्या किया जाए?*

मैं नहीं जानता। समरहिल में ऐसे नमूने दिखते ही नहीं। जब बच्चे आज़ाद हों तो ज़िद का मौका नहीं आता। बच्चों में नज़र आने वाली ढिठाई की ज़िम्मेदारी हमेशा वयस्कों की होती है। अगर आपका नज़रिया बच्चों के प्रति प्रेम का है तो आप जो चाहे करें वह ज़िद्दी नहीं बनेगा। ज़िद्दी बच्चों की हमेशा कोई न कोई शिकायत होती है। ज़िद की स्थिति में मेरा काम होगा उसकी शिकायत की जड़ें तलाशना। मेरा अनुमान है कि तहकीकात करने पर पता चलेगा कि उसे लगता यह है कि उसके साथ अन्याय हुआ है।

सवाल : *मैं अपने छह साल के बच्चे का क्या करूँ जो अश्लील चित्र बनाता है?*

उसे ऐसा करने दें। पर साथ ही अपने घर की सफाई करें। क्योंकि अगर घर में कहीं अश्लीलता है तो उसके स्त्रोत स्वयं आप हैं। किसी भी छह साल के बच्चे में स्वाभाविक अश्लीलता नहीं होती। उसके चित्रों में अगर आपको अश्लीलता नज़र आती है तो दरअसल यह आपकी ही अश्लील जीवन दृष्टि है। मेरा अनुमान है कि जिसे आप अश्लील चित्र कह रहे हैं उसका ताल्लुक पाखाने जाने या गुप्तांगों के चित्रण से होगा। बच्चे को आप अच्छे-बुरे का विचार थोपे बिना, स्वाभाविक मानकर ऐसा करने दें। यह बचकानी और अस्थाई रुचि है, जैसी तमाम अन्य बचकानी रुचियाँ होती हैं। वह इस दौर से जल्दी ही बाहर निकल जाएगा।

सवाल : *मेरा नन्हा इतना झूठ क्यों बोलता है?*

सम्भव है वह अपने माता-पिता की ही नकल कर रहा है।

सवाल : *अगर पाँच और सात साल के भाई-बहन लगातार झगड़ते रहें तो उन्हें रोकने का क्या रास्ता अपनाऊँ? वैसे वे एक दूसरे से बहुत प्यार भी करते हैं।*

सच में? क्या एक को माँ का प्यार दूसरे की तुलना में ज़्यादा तो नहीं मिल रहा? क्या वे माँ-पापा की नकल तो नहीं कर रहे हैं? क्या उनके मन में अपने शरीर को लेकर किसी किस्म का अपराध-बोध तो नहीं है? क्या उन्हें सज़ा दी जाती है? अगर इन तमाम सवालों का जवाब नकारात्मक है, तो यह लड़ाई झगड़ा अपनी सत्ता जमाने की स्वाभाविक लड़ाई है।

पर भाई-बहन को ऐसे बच्चों के साथ भी रहना चाहिए जिनके प्रति उनका भावनात्मक जुड़ाव नहीं है। बच्चे को दूसरों से खुद की तुलना करने का मौका मिलना ही चाहिए। वह अपने भाइयों या बहनों को मानदण्ड मानकर खुद का आकलन नहीं कर सकता। ऐसा करने पर तमाम तरह के भावनात्मक घटक भी उस रिश्ते में जुड़ जाते हैं। जैसे जलन, पक्षपात आदि।

सवाल : *अपने बच्चे को अँगूठा चूसने से कैसे रोकूँ?*

कोशिश भी न करें। अगर आप सफल होते हैं तो आप उसे अँगूठा चूसने के पहले की स्थिति में धकेल चुके होंगे। इससे फर्क क्या पड़ता है? तमाम कार्यकुशल लोग एक समय अँगूठा चूसा करते थे।

अँगूठा चूसना बच्चे की स्तनपान में रुचि के अब तक बने रहने का सूचक है। ज़ाहिर है आठ साल के बच्चे को आप स्तनपान तो नहीं करा सकते। आपको उसकी रचनात्मक रुचि को बाँधने वाले तमाम रास्ते सुझाने होंगे। पर ज़रूरी नहीं है कि इससे यह आदत छूट ही जाए। मेरे यहाँ कई बेहद रचनात्मक छात्र रहे हैं जो परिपक्व बनने की उम्र तक अँगूठा चूसते रहे। इस बात पर बच्चे को न ठोकें।

सवाल : *मेरा दो साल का बच्चा हमेशा खिलौने क्यों तोड़ता है?*

शायद इसलिए क्योंकि वह समझदार है। खिलौने अमूमन बिल्कुल रचनात्मक नहीं होते। उसे तोड़कर वह यह जानना चाहता है कि उसके अन्दर क्या है?

पर मैं पूरी स्थिति से वाकिफ भी नहीं हूँ। अगर बच्चे को मार-पीटकर, उसे अच्छे-बुरे के उपदेश देकर खुद से नफरत करने वाला बच्चा बनाया जा रहा है तो यह बिलकुल स्वाभाविक है कि उसके सामने जो कुछ आएगा वह उसे ज़रूर तोड़ेगा।

सवाल : *बच्चा अगर बहुत फैलावड़ा करता है तो उसे कैसे सुधारा जाए?*

इसे सुधारना क्यों ज़रूरी है? अधिकांश रचनात्मक लोग सफाई पसन्द नहीं होते। अमूमन जो लोग नीरस और निरुत्साही होते हैं उनके ही कमरे चकाचक साफ होते हैं। वे सफाई के आदर्श सामने रखते हैं। मैंने पाया है कि सामान्यतः नौ साल तक के बच्चे सफाई से रहते हैं। नौ से पन्द्रह साल की उम्र में वे ही बच्चे सब कुछ फैलाते हैं। इस उम्र के लड़के लड़कियों को गन्दगी और फैलावड़ा नज़र ही नहीं आता। इस दौर को पार करने के बाद वे फिर से सफाई पसन्द बन जाते हैं।

सवाल : *हमारा बारह साल का बेटा खाने की मेज़ पर आने के पहले हाथ मुँह नहीं धोता। हम क्या करें?*

साफ-सफाई पर इतना महत्व देने की क्या ज़रूरत है? क्या आपने कभी यह भी सोचा है कि बार-बार हाथ-मुँह धोना भी किसी बात का प्रतीक हो सकता है? कहीं ऐसा तो नहीं कि उसके साफ रहने के प्रति आपका सरोकार इस वजह से हो कि आप उसे नैतिक रूप से गन्दा मान रहे हैं? बच्चे के पीछे न पड़ें। मेरी बात पर विश्वास करें कि गन्दगी को लेकर यह ग्रन्थि व्यक्तिगत रुचि पर आधारित होती है। अगर आप खुद को गन्दा महसूस करते हैं, तभी बाहरी सफाई पर इतना ज़ोर डालने की वृत्ति बनती है। अगर यह ज़रूरी हो कि जब वह खाने की मेज़ पर साफ चिकना बनकर ही आए (मेरा मतलब है कि जब कोई बुआ या चाची के साथ खाने बैठना हो जो आपके बेटे को अपनी वारिस बनाने वाली हों) तो सबसे अच्छा तरीका होगा कि हाथ-मुँह धोने पर बन्दिश लगा दें।

सवाल : *हम अपने पन्द्रह महीने के बच्चे को चूल्हे से दूर कैसे रखें?*

चुल्हे के सामने आड़ लगाएँ। पर उसे उसकी सच्चाई भी जान लेने दें। उसकी अँगुलियाँ अगर हल्के से जलेंगी तो वह दूर रहना सीख जाएगा।

सवाल : *मैं अपनी बेटी को ज़रा भी टोकूँ तो आप कहेंगे कि मैं उससे नफरत करती हूँ, पर मैं ऐसा नहीं करती।*

शायद आप खुद से नफरत करती हों। छोटी-छोटी चीज़ें बड़ी बातों का प्रतीक होती हैं। अगर आपको छोटी बातों पर शिकायत करने की ज़रूरत लगती है तो

आप ज़रूर दुखी महिला होंगी।

सवाल : *बच्चों को किस उम्र में शराब पीने की छूट देनी चाहिए?*

इस बारे में मैं खुद अनिश्चित हूँ। शराब को लेकर मेरी एक निजी ग्रन्थि है। मुझे बीयर पसन्द है। कभी-कभार व्हिस्की भी लेता हूँ। मुझे दूसरी तरह की शराबें भी पसन्द हैं। इसलिए मैं पूर्ण नशाबन्दी का समर्थक तो नहीं हूँ। फिर भी मैं शराब से डरता हूँ। अपनी जवानी में मैंने शराब की तबाही ज़रूर देखी है। यही कारण है कि मैं बच्चों को शराब देना पसन्द नहीं करता।

मेरी बिटिया ने छुटपन में मेरी बियर और व्हिस्की में रुचि दिखाई। मैंने उसे घूँट भरने दिए। बीयर का घूँट ले उसने मुँह बिचकाया और कहा 'बड़ा खराब स्वाद है।' पर व्हिस्की के बाद कहा 'बढ़िया', पर और नहीं माँगी। डेनमार्क में मैंने स्व-निर्देशित बच्चों को एक बार देसी शराब माँगते देखा। उन्हें एक-एक गिलास शराब दी गई। उन्होंने आखिरी बूँद तक पी डाली पर आगे नहीं माँगी। मुझे एक किसान की याद आती है। वह ठण्डे बरसाती दिनों में अपने बच्चों को लेने एक खुली घोड़ा गाड़ी में आया करता था। वह अपने साथ व्हिस्की की बोतल रखता था। हरेक बच्चे को एक-एक घूँट पिलाता था। मेरे पिता यह देख भविष्यवाणी करते थे, "देखना बाद में सब के सब पियक्कड़ बनेंगे।" बड़े होने पर उनमें से एक ने भी शराब को हाथ नहीं लगाया।

देर-सबेर सभी बच्चों के सामने शराब का सवाल उठता है। केवल वे ही लोग शराबी बनते हैं जो अपने जीवन से निपट नहीं पाते। हमारे पूर्व छात्र जब भी समरहिल आते हैं, स्थानीय शराबखाने (पब) में जाकर हमेशा हमप्याला बनते हैं। पर आज तक मैंने नहीं सुना कि उनमें से एक ने भी ज़्यादा पी ली हो।

बिल्कुल अतार्किक होते हुए भी मैं स्कूल में शराब की अनुमति नहीं देता। ज़ाहिर है कि कुछ लोग कहेंगे कि बच्चों को खुद शराब का अनुभव भी लेने देना चाहिए।

सवाल : *जो बच्चे नहीं खाते उनका आप क्या करते हैं?*

पता नहीं। ऐसा कोई बच्चा समरहिल तो आया नहीं। पर अगर कोई ऐसा करता तो मैं समझता कि बच्चा अपने माँ-बाप को अपनी ढिठाई जताना चाहता है। कुछ बच्चे इसलिए समरहिल भेजे ज़रूर गए थे कि वे खाना नहीं खाते। पर यहाँ उन्होंने फाके नहीं किए।

कुछ पेचीदा मामलों में इस सम्भावना पर भी शायद विचार करूँ कि कहीं बच्चा भावनात्मक रूप से अभी भी स्तनपान के स्तर पर तो नहीं है। और ऐसा लगे तो मैं उसे बोतल से दूध पिलाने का सुझाव दूँगा। मुझे यह भी लगेगा कि शायद माँ-बाप खाने-पीने के मामले में बच्चे के पीछे पड़ते होंगे। सम्भव है कि उसे जो नापसन्द हो वह खाने पर बच्चे को मजबूर किया गया हो।

सेक्स के बारे में

सवाल : *अश्लील साहित्य (पोर्नोग्राफी) क्या है?*

इस प्रश्न का जवाब देना आसान नहीं है। दरअसल मुझे अश्लीलता को यौन तथा अन्य प्राकृतिक कार्यों के प्रति एक अश्लील दृष्टिकोण, एक ऐसे अपराध-बोध के रूप में परिभाषित करना चाहिए जो दमित स्कूली छात्रों में जागता है। यही उन्हें अन्धेरे कोनों में ठिठियाने और अश्लील शब्द दीवारों पर लिखने को प्रेरित करता है।

ज़्यादातर यौन किस्से अश्लील होते हैं। उन्हें कहने वाला खुद को यह समझा लेता है कि अच्छा किस्सा उसमें निहित गन्दगी से नहीं, बल्कि किस्से को कहने की कला में, उसके हास्य में निहित होती है। अन्य पुरुषों की तरह मैंने भी हज़ारों यौन किस्से सुने और सुनाए हैं। पर पलटकर सोचने पर लगता है कि उनमें से एक-दो ही ऐसे होंगे जो वास्तव में सुनाने लायक थे।

मैंने पाया है कि यौन किस्से सुनाने वाला व्यक्ति अक्सर वह होता है जिसका यौन-जीवन सन्तोषजनक न हो। यह कहना गलत होगा कि हरेक यौन कथा दमन का नतीजा है। क्योंकि यह तो ऐसी बात होगी कि हास्य ही दमन का नतीजा है। जब चार्ली चैपलिन को मैंने बेदिंग सूट में दो इंच पानी में गोता लगाते देखा तो मैं ठहाके मारकर हँसा, पर गोता लगाने को लेकर मेरी कोई कुण्ठा नहीं है। हास्य तो हरेक हास्यास्पद घटना में होता है। फिर चाहे घटना का रिश्ता यौन से हो या किसी दूसरी चीज़ से।

वर्तमान समाज में हममें से कोई भी एक स्पष्ट रेखा खींचकर यह नहीं कह सकता कि यह अश्लील है और यह नहीं। व्यावसायिक यात्रियों के कहलाए जाने वाले किस्सों में से कई मुझे अपने छात्र जीवन में अच्छे लगा करते थे। पर आज मैं सोचता हूँ कि उनमें से निन्यानवे प्रतिशत भौंडे और अश्लील थे।

अश्लील साहित्य कमोबेश यौन तथा अपराध-बोध का मिला-जुला रूप ही है। जो सुनने वाले विदूषक की सांकेतिक बातों पर ठहाके लगाते हैं, दरअसल ऐसे लोग होते हैं जिनका यौन के प्रति दृष्टिकोण ही रोगग्रस्त होता है। बच्चों को घटिया, गन्दी यौन कथाएँ सुनाने वाले वयस्क विकास के उसी चरण में अटके हुए लोग होते हैं।

अगर सभी बच्चे मुक्त हों और यौन के प्रति उनका स्वस्थ अभिमुखीकरण किया

गया हो तो वयस्कों के अश्लील किस्सों का बाज़ार ही ठप्प हो जाए। पर क्योंकि लाखों-करोड़ों बच्चे यौन के अज्ञानी हैं, अपराध-बोध से ग्रसित हैं, अश्लील वयस्कों को यह अवसर मिलता है कि वे उनकी अज्ञानता और अपराध-बोध को और बढ़ाते चलें।

सवाल : *क्या कुछ खास प्रकार के यौन आचरण अनुचित होते हैं?*

अगर यौन क्रिया में हिस्सा लेने वाले दोनों व्यक्तियों को उसमें आनन्द का अनुभव हो तो हर प्रकार का यौन आचरण उचित ही कहलाएगा। यौन असामान्य व कुत्सित तब ही है जब उसमें दोनों सहभागियों को आनन्द की अनुभूति नहीं होती।

विवाह को शालीन यौन अर्थात नियंत्रित यौन के साथ जोड़ा जाता है। अगर उन युवक-युवतियों को, जो अपने माता-पिता के यौन जीवन को स्वीकार करने लगे हों, यह पता चले कि उनके माता-पिता भी कामक्रीड़ा का आनन्द लेते हैं तो शायद उन्हें गहरा धक्का लगे। समाज के सत्ता स्तम्भों ने कामक्रीड़ा को अश्लीलता का दर्ज़ा दे डाला है। जो यौनक्रीड़ा से भयभीत हैं उनकी प्रतिक्रिया भी कुछ ऐसी ही है। अगर वे कामक्रीड़ा करना भी चाहें तो भी शायद वे आक्रामकता का अनुभव करें। ऐसी आक्रामकता जो निषिद्ध या वर्जित कार्य करने की लोलुपता से जन्मी हो।

जब यौन कोमल हो, प्रेम में नहाया हो तो कुछ भी अनुचित नहीं होता।

सवाल : *बच्चे हस्तमैथुन क्यों करते हैं? क्या उन्हें रोका जाना चाहिए?*

हमें सबसे पहले शैशवावस्था के हस्तमैथुन और वयस्कों के हस्तमैथुन में अन्तर करना पड़ेगा। बच्चों में यह क्रिया वास्तव में हस्तमैथुन होती ही नहीं है। इसका जन्म जिज्ञासा में होता है। बच्चा अपने हाथ, नाक, उँगलियों को तलाशता है। उस वक्त माताएँ आल्हादित होती हैं। पर जब यही वह अपने गुप्तांग के साथ करता है तो माँ उसका हाथ तेज़ी से झटकाती है। नतीजा यह होता है कि बच्चे को अपने शरीर का सबसे रोचक हिस्सा यौनांग ही लगने लगता है।

शिशु का सर्वाधिक उत्तेजना वाला क्षेत्र होता है उसका मुँह। यही कारण है कि जिन बच्चों पर हस्तमैथुन को लेकर नैतिक वर्जनाएँ नहीं थोपी जातीं वे अपने यौनांग में रुचि भी कम ही लेते हैं। अगर किसी छोटे बच्चे को हस्तमैथुन की आदत पड़ चुकी हो तो इसका इलाज इस आदत के अनुमोदन द्वारा ही किया जा सकता है। ताकि जो वर्जित है उसे करने की बाध्यता उसमें न जागे।

उन बड़े बच्चों में भी जो वयःसंधि की अवस्था तक पहुँच चुके हैं, अनुमोदन द्वारा इस आदत में कमी लाई जा सकती है। पर यह याद रखना चाहिए कि यौनेच्छा को भी अभिव्यक्ति का रास्ता चाहिए। आजकल विवाह देर से होते हैं। जब तक व्यक्ति घर बसाने लायक न हो जाए विवाह सम्भव नहीं होता। ऐसे में यौन

परिपक्व युवाओं के समक्ष दो ही रास्ते होते हैं, हस्तमैथुन या गोपनीय यौन सम्बंध। नैतिकता की दुहाई देने वाले इन दोनों ही रास्तों की आलोचना करते हैं, पर कोई विकल्प भी प्रस्तुत नहीं कर पाते। वे पवित्रता के समर्थक हैं जो वास्तव में शरीर को सूली पर चढ़ाने के ही समान है। ऐसा त्याग सन्यासी कर सकते हैं पर साधारण लोगों को यौन इच्छाओं की अभिव्यक्ति का कोई मार्ग चाहिए ही होता है।

जब तक विवाह को उसके आर्थिक पक्ष से स्वतंत्र नहीं किया जाता, हस्तमैथुन एक भारी समस्या बनी रहेगी। हमारे चलचित्र, उपन्यास आदि युवा वर्ग में काम भावनाएँ जगाते हैं। और क्योंकि सहज यौन सम्बंधों की युवाओं को अनुमति नहीं है वे हस्तमैथुन की दिशा में बढ़ने को मजबूर होते हैं। इस जानकारी से कि दरअसल सभी लोग हस्तमैथुन करते हैं, खास मदद नहीं मिलती। ऐसे में युवक-युवती के लिए साथ-साथ रहने की, विवाह समान व्यवस्था ही अकेला उपाय लगता है। पर जब तक यौन के साथ पाप का विचार जुड़ा है यह व्यवस्था एक सामाजिक समाधान का रूप नहीं ले सकती।

फिर से प्रश्न की ओर लौटें : बच्चे से कहें कि हस्तमैथुन पापाचार नहीं है। अगर आप बच्चे को इसके परिणामों के विषय में झूठ बोल चुके हैं कि वह ऐसा करने पर रोगी या पागल बन सकता है, तो हिम्मत जुटाकर उससे साफ कहें कि आपने झूठ बोला था। केवल तब ही आपके बच्चे के लिए हस्तमैथुन का महत्व, उसमें रुचि कम हो पाएगी।

सवाल : *मेरी बिटिया बारह साल की है और घटिया, अश्लील किताबें पढ़ती है। मैं इस विषय में क्या करूँ?*

अगर खरीदने लायक पैसे मेरे पास होते तो मैं उसे ऐसी किताबें खुद खरीदकर देता। तब वह ऐसे घासलेटी साहित्य में अपनी रुचि को पूरी तरह जी लेती।

पर उसकी अश्लीलता में रुचि क्यों है? क्या वह यौन की उस सच्चाई को तलाश रही है, जिसके बारे में आपने उसे खुलकर कुछ बताया नहीं है?

सवाल : *क्या आप एक चौदह साल के बच्चे को अश्लील किस्से सुनाने पर डाँटेंगे?*

कतई नहीं। मैं उसे बेहतर किस्से सुनाऊँगा। अधिकतर वयस्क यौन किस्से सुनाते हैं। मुझे कुछ अच्छे किस्से एक पादरी से मिले थे। यौन में रुचि की निन्दा करना ढकोसला है, यह महज़ पाखण्ड है।

यौन किस्से दरअसल यौन दमन का सीधा परिणाम हैं। पाप के सिद्धान्त से युवावर्ग में जो आवेग उपजता है, उसे बाहर निकालने का एक तरीका है। आज़ादी के वातावरण में अश्लील किस्से अपनी प्राकृतिक मौत मरते हैं। यानी *लगभग* मर जाते हैं पर पूरी तरह नहीं। पूरी तरह इसलिए नहीं मरते क्योंकि यौन में मानव की एक बुनियादी रुचि है।

सवाल : *यौन शिक्षा किसे देनी चाहिए शिक्षकों को या माता-पिता को?*
ज़ाहिर है, माता-पिता को।

धर्म के विषय पर

सवाल : *आप धार्मिक शिक्षा के विरुद्ध क्यों हैं?*

बच्चों के साथ काम करने के लम्बे अनुभव में मैंने पाया है कि उन बच्चों में मनोरोग के लक्षण नज़र आते हैं जिन्हें कठोर धार्मिक वातावरण में पाला-पोसा गया है। कठोर धार्मिक पालन-पोषण यौन भावनाओं को अनावश्यक महत्व देता है।

धार्मिक शिक्षा बालमानस पर इसलिए नुकसान पहुँचाती है क्योंकि अधिकांश धार्मिक लोग मूल पाप के विचार को स्वीकार करते हैं। यहूदी और ईसाई धर्म में शरीर के प्रति नफरत का नज़रिया हावी है। परम्परागत ईसाई धर्म बच्चे के मन में स्वयं के प्रति एक असन्तोष का भाव भरता है। स्कॉटलैण्ड में, जहाँ मेरा बचपन बीता, मैं कम उम्र से ही नरक की आग के खतरे से डरता था।

एक बार एक मध्यमवर्गीय परिवार का नौ साल का लड़का समरहिल आया। उसके साथ मेरी जो बातचीत हुई, वह कुछ यूँ थीः

''खुदा कौन है?''

''यह नहीं पता। पर अगर कोई अच्छा बच्चा बने तो वह स्वर्ग जाता है और खराब हो तो नरक।''

''नरक कैसी जगह है?''

''बिल्कुल अन्धेरी। वहाँ शैतान है। शैतान बहुत खराब है।''

''अच्छा, और नरक में कौन जाता है?''

''खराब लोग जो गालियाँ बकें या लोगों का खून करें।''

बच्चों को इस तरह की बेवकूफी भरी बातें सिखाने से हम कब बाज़ आएँगे। गाली-गलौज और खून क्या बराबर से गुनाह हैं जिसकी ऐसी सज़ा हमें मिलेगी ही?

जब मैंने उस बच्चे से कहा कि वह खुदा का वर्णन करे तो उसने बताया कि उसे यह पता ही नहीं कि खुदा होता कैसा है। पर वह खुदा से प्यार ज़रूर करता है। उसने कहा कि वह खुदा से प्यार करता है, ऐसे खुदा से जिसका वह न तो वर्णन कर सका, न जिसे उसने कभी देखा था। ज़ाहिर है कि वह केवल सुनी-सुनाई बात कर रहा था। सच्चाई यह है कि वह खुदा से *खौफ* खाता है।

सवाल : *क्या आप ईसा मसीह में विश्वास करते हैं?*

कुछ साल पहले समरहिल में एक गृहस्थ उपदेशक का बच्चा दाखिल हुआ। इतवार की रात जब हम सब नाच गाना कर रहे थे, पादरी ने सिर हिलाते हुए कहा, ''नील इतनी खूबसूरत जगह है आपकी। पर आप सब काफिरों के समान क्यों हैं?''

मेरा जवाब था, ''उपदेशक जी आप उम्र भर साबुन के खाली डिब्बों पर खड़े होकर लोगों को उपदेश देते रहे हैं कि उनका उद्धार कैसे होगा। मुक्ति की *बात करते हैं*। हम मुक्ति में *जीते हैं*।''

जी नहीं, हम ज़ाहिराना तौर पर इसाई धर्म का पालन नहीं करते। पर अगर व्यापक दृष्टि से देखें तो समूचे इंग्लैण्ड में शायद समरहिल ही अकेला स्कूल है जो बच्चों से ऐसा व्यवहार करता है, ईसा मसीह जिसकी तारीफ करते। दक्षिण अफ्रीका के कैल्विनिस्ट सम्प्रदाय के पादरी अपने बच्चों को पीटते हैं। ठीक उसी तरह जैसे रोमन कैथोलिक सम्प्रदाय के पादरी बच्चों को पीटते हैं। हम समरहिल में बच्चों को प्यार और प्रशंसा देते हैं।

सवाल : *बच्चों को खुदा के बारे में पहले विचार कैसे दिए जाएँ?*

खुदा है कौन? मैं तो जानता नहीं। ईश्वर का मतलब मेरी नज़र में है हम सबमें बसी अच्छाईयाँ। अगर आप किसी ऐसी चीज़ के बारे में बच्चों को बताते हैं, जिसके बारे में आप खुद भी अस्पष्ट हैं तो आप उसे फायदा नहीं नुकसान पहुँचा रहे होंगे।

सवाल : *क्या कसम खाना भगवान के नाम का गलत इस्तेमाल है?*

बच्चों की कसमों में सेक्स या शारीरिक क्रियाएँ होती हैं - भगवान नहीं। एक ऐसे धार्मिक व्यक्ति से बहस करना मुश्किल है जो भगवान को एक आराध्य के रूप में पेश करता है और बाईबल को सम्पूर्ण सत्य मानकर चलता है। अगर भगवान को भय की बजाए प्रेम की शय के रूप में पेश किया जाता तो कोई भी भगवान के नाम का गलत इस्तेमाल नहीं करेगा। भगवान की निन्दा करने का उपचार है हमारे भगवान को प्रेम भरा बनाना।

मनोविज्ञान के विषय में

सवाल : *क्या यह अवश्यम्भावी नहीं कि हरेक इन्सान बड़ा होकर मनोरोगी बने?*

फ्रॉयड की शोध से जो सवाल हमारे सामने उभरे हैं उनका जवाब है स्व-निर्देशन। हरेक मनोविश्लेषक को यह तो लगता ही होगा कि उसके रोगियों को विश्लेषण की ज़रूरत ही नहीं पड़ती अगर वे बचपन से स्व-निर्देशित होते। सम्भव है कि मेरी स्व-निर्देशित बिटिया को ही किसी दिन मनोविश्लेषक के पास जाकर यह कहना

पड़े, ''डॉक्टर साब मुझे इलाज की ज़रूरत है। मेरे मन में अपने पिता को लेकर एक ग्रन्थि है। मैं इस बात से परेशान हो चुकी हूँ कि मेरा परिचय हमेशा ए.एस.नील की पुत्री के रूप में दिया जाता है। लोग मुझसे हमेशा बड़ी-बड़ी उम्मीदें रखते हैं। वे सोचते हैं कि मुझमें कोई कमियाँ नहीं होनी चाहिए। बुजुर्गवार खुद तो चल बसे पर अपनी किताबों में मेरा अनावश्यक प्रदर्शन कर गए। मैं उन्हें कभी माफ नहीं कर सकती।'' कौन जाने।

सवाल : *खुद के प्रति नफरत किस तरह ज़ाहिर होती है?*

बच्चों में स्वयं के प्रति नफरत उनके असामाजिक व्यवहार में झलकती है। लड़ना झगड़ना, विद्वेष, बदमिज़ाजी, तोड़-फोड़ करने की वृत्ति। खुद के प्रति नफरत हमेशा दूसरों के प्रति नफरत में तब्दील होकर नज़र आती है।

एक अवैध बच्चे की माँ दूसरों में अनैतिक व्यवहार का लांछन लगा सकती है। अपनी कमज़ोरी पर काबू नहीं पा सकने वाले शिक्षक बच्चों पर बेंत जमाएँगे। ताउम्र विवाह न करने वाले और अपनी स्वाभाविक यौन भावनाओं को दबाने वाले कड़वाहट और दूसरों के बारे में किस्से कहानियाँ ही फैलाएँगे। हर तरह की नफरत दरअसल खुद के प्रति नफरत ही है।

यहूदियों पर वे लोग ही अत्याचार करते हैं जो खुद से नफरत करते हैं। यही बात अश्वेतों पर भी लागू होती है। अर्द्धश्वेत या यूरेशियाई लोग अश्वेतों के प्रति श्वेतों की तुलना में कहीं ज़्यादा असहिष्णु होते हैं।

सवाल : *जब आप बच्चों का पक्ष लेते हैं तो क्या आप दरअसल उन पर अपनी मिल्कियत नहीं जमाना चाहते?*

यह सच हो तो भी क्या? जो मैं करता हूँ अगर बच्चों को उससे मदद मिलती हो, तो मेरे उद्देश्य से फर्क क्या पड़ता है?

सवाल : *मैं एक आठ साल की बच्ची को जानती हूँ जो अपनी माँ की मौजूदगी में हकलाती है। ऐसा क्यों?*

हकलाना अक्सर कहने के पहले कुछ समय पाने की कोशिश होती है ताकि खुद को बचाया जा सके। जब मुझसे कोई कठिन सवाल पूछा जाता है तो मैं अपने अज्ञान को छुपाने की कोशिश में शरुआत में कहता हूँ, ''हाँ, अरे, हूँ''। लगता है कि बच्ची अपनी माँ से डरती है। मेरा अनुमान है कि उसकी माँ उसे हमेशा नैतिकता का उपदेश छाँटती होगी।

मैंने पाया कि एक बच्चे की हकलाहट का कारण था अपनी हस्तमैथुन की बात को छुपाने की कोशिश। उसमें अपने इस कृत्य को लेकर अपराध-बोध था। इसका

उपचार उसे इस बात से आश्वस्त करना था कि हस्तमैथुन पाप नहीं है। पर हकलाने के मनोविज्ञान के विषय में पर्याप्त शोध होना अभी बाकी है।

सवाल : *क्या पति पत्नी का और पत्नी पति का मनोविश्लेषण कर सकते हैं?*

किसी भी सम्बंधी को ऐसा नहीं करने देना चाहिए। मुझे कुछ ऐसे उदाहरण पता हैं जिनमें पति या पत्नी में ऐसी कोशिश की गई। पर ऐसे विश्लेषण हमेशा असफल रहे हैं और कहीं तो नुकसानदायक भी। किसी भी पालक को खुद अपने बच्चे का मनोविश्लेषण कभी नहीं करना चाहिए, तरीका चाहे कोई भी हो।

सवाल : *बच्चों को पढ़ाने वाले कई कठोर शिक्षकों के प्रति माता पिता क्यों इतनी कृतज्ञता जताते हैं?*

सवाल अहंकार से जुड़ा है। जो व्यक्ति खड़ा होकर कहता है, ''मुझे बचपन में खूब ठोका गया था। देखा उसका कितना फायदा हुआ'' दरअसल यह कह रहा होता है, ''मेरी ओर देखो। मैं आज एक सफल इन्सान हूँ। बचपन में पिटने के बावजूद या शायद उसी वजह से।''

गुलाम को मुक्ति की चाह नहीं होती। वह तो मुक्ति को समझकर उसका आनन्द भी नहीं ले पाता है। बाहरी अनुशासन लोगों को गुलाम, नीच और स्व-निन्दक बनाता है। वह अपनी ज़ंजीरों को प्रेम करते हैं।

सवाल : *क्या सामान्य शिक्षक भी मनोविश्लेषण कर सकते हैं?*

नहीं ऐसा नहीं किया जा सकता। शिक्षक को पहले खुद अपना ही विश्लेषण करवाना होगा। आखिर उसका अचेतन मानस भी तो उसके लिए अजाना क्षेत्र है। वह किसी बच्चे की अन्तरात्मा के अनजाने इलाके को किस तरह तलाश सकेगा।

सीखने के विषय में

सवाल : *आप लैटिन और गणित के विरुद्ध हैं। बच्चों के मस्तिष्क के विकास के बारे में आपके क्या सुझाव हैं?*

मैं तो यह जानता ही नहीं कि 'दिमाग' दरअसल है क्या? अगर गणित या लैटिन के विशेषज्ञों के दिमाग महान होते हैं, तो इसकी जानकारी कम से कम मुझे नहीं रही है।

सवाल : *क्या उच्च गणित के प्रति आपकी नापसन्दगी का असर समरहिल के बच्चों पर पड़ता हैं? क्या वे इस वजह से गणित नहीं पढ़ते?*

मैं बच्चों से कभी गणित पर बात नहीं करता। मुझे गणित इस कदर पसन्द है कि मैं अक्सर ज्यामिति या बीजगणित की समस्याएँ मज़ा लेने के लिए हल करता हूँ।

मेरा कहना सिर्फ इतना है कि बच्चों के लिए गणित का अध्ययन बेहद अमूर्त बना दिया गया है। अमूमन सभी बच्चे गणित से नफरत करते हैं। आप किसी भी बच्चे से पूछें तो वह दो सेब या दो जामुन तो समझता है, पर बिरले ही एक्स सेब की बात समझते हैं।

साथ ही गणित से मेरी जो आपत्ति है वही लैटिन और ग्रीक भाषाओं से भी है। उन बच्चों को द्विघाती समीकरण क्या पढ़ाई जाएँ जो बाद में गाड़ियाँ सुधारने या मोज़े बेचने का काम करने वाले हों। यह तो पागलपन है।

सवाल : *क्या आप गृहकार्य में विश्वास करते हैं?*

मैं तो कक्षा कार्य को भी तब तक गैरज़रूरी मानता हूँ, जब तक बच्चा उसे खुद अपनी इच्छा से न चुने। गृहकार्य की लत शर्मनाक है। बच्चे उससे नफरत करते हैं। अपने आप में उसे खत्म करने का यही एक कारण काफी है।

सवाल : *कुछ बच्चे केवल तब ही क्यों सीखते हैं, जब उन्हें पीटा जाता है?*

मुझे लगता है कि अगर मुझे पिटाई का डर हो तो मैं भी कुरान या गीता का पाठ करना सीख जाऊँ। पर इसका एक असर यह होगा कि मैं ताउम्र गीता या कुरान से नफरत करूँगा और खुद भी बच्चों को मारने वाला बनूँगा।

सवाल : *एक शिक्षिका को उस वक्त क्या करना चाहिए जब कक्षा में पढ़ाते वक्त एक लड़का अपनी पेंसिल से खेल रहा हो?*

पेंसिल यानी शिश्न। बच्चे के लिए शिश्न से खेलना निषिद्ध है। उपचार-अभिभावकों से कहें कि वे हस्तमैथुन पर से प्रतिबंध हटा दें।

एकलव्य : एक परिचय

एकलव्य एक स्वैच्छिक संस्था है। यह पिछले कई वर्षों से शिक्षा एवं जनविज्ञान के क्षेत्र में काम कर रही है। एकलव्य की गतिविधियाँ स्कूल व स्कूल के बाहर दोनों क्षेत्रों में हैं।

एकलव्य का मुख्य उद्देश्य है ऐसी शिक्षा जो बच्चे व उसके पर्यावरण से जुड़ी हो, जो खेल, गतिविधि व सृजनात्मक पहलुओं पर आधारित हो। अपने काम के दौरान हमने पाया कि स्कूली प्रयास तभी सार्थक हो सकते हैं जब बच्चों को स्कूली समय के बाद, स्कूल से बाहर और घर में भी रचनात्मक गतिविधियों के साधन उपलब्ध हों। इन साधनों में किताबें तथा पत्रिकाएँ एक अहम हिस्सा हैं।

पिछले कुछ वर्षों में हमने अपने काम का विस्तार प्रकाशन के क्षेत्र में भी किया है। बच्चों की पत्रिका **चकमक** के अलावा **स्रोत** (विज्ञान एवं टेक्नॉलॉजी फीचर) तथा **संदर्भ** (शैक्षिक पत्रिका) हमारे नियमित प्रकाशन हैं। शिक्षा, जनविज्ञान, बच्चों के लिए सृजनात्मक गतिविधियों के अलावा विकास के व्यापक मुद्दों से जुड़ी किताबें, पुस्तिकाएँ, सामग्री आदि भी एकलव्य ने विकसित एवं प्रकाशित की हैं।

वर्तमान में एकलव्य मध्यप्रदेश में भोपाल, होशंगाबाद, पिपरिया, देवास, इन्दौर व शाहपुर (बैतूल) में स्थित केन्द्रों तथा परासिया (छिंदवाड़ा), हरदा व उज्जैन में स्थित उपकेन्द्रों के माध्यम से कार्यरत है।